कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाईक): भारत की जनता ने।

श्री ईश दत्त यादव: और जब आप ने सत्ता ले ली तो 9 महीने का समय काफी होता है अर्थ-व्यवस्था को सुधारने के लिए। लेकिन इस बीच आप ने इस देश के लिए कुछ नहीं किया। मैं आप से सवाल पूछना चाहता हूं कि क्या गरीबी रेखा के नीचे 9 महीने पहले जो लोग रहते थे, उन में से 0.5 प्रतिशत लोग भी गरीबी रेखा के ऊपर आए? क्या किसान की हालत में कोई सुधार हुआ? ...(**व्यवधान**)...

श्री संघ प्रिय गौतम: आप की तनख्वाह तीन गुनी हो गयी। ...(**व्यवधान**)...

श्री नीलोत्पल बसु: इस तरह से कोई बिल पास नहीं होगा।

श्री ईश दत्त यादव: गौतम जी, आप का कोई इलाज नहीं है...

उपसभापति: गौतम जी, आप चाय पीकर आ जाइए

श्री ईश दत्त यादव: मैडम, मैं किसान की बात कर रहा था कि किसान की स्थिति में कोई सुधार हुआ? मजदूर की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार हुआ और 9 महीने पहले जब वित्त मंत्री जी ने पदभार ग्रहण किया, उस दिन से लेकर महंगाई बढ़ने के बजाय क्या घटी है? मैडम, इस सब का एक ही जवाब होगा कि न महंगाई घटी, न गरीबी घटी, न किसान की स्थिति में कोई सुधार आया और न मजदूर की स्थिति में कोई सुधार आया। सिर्फ पोखरन पर आप कितने दिन बिंदा रहना चाहते हैं? मैं मानता हूं कि पोखरन से देश का सम्मान बढ़ा है, गौरव बढ़ा है और मैं इस कार्य के लिए अपने देश के वैज्ञानिकों-ए०पी०जे० अब्दुल कलाम और उन के साथियों को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैडम, वे लोग हमारे देश का गौरव हैं जिन्होंने देश की शक्ति बढ़ाई है, देश का सम्मान बढ़ाया है। लेकिन बार-बार पोखरन की बात कहकर आप कितने दिन चल पाएंगे? गांवों की हालत गौतम जी जानते होंगे जहां आज भी गरीब लोगों के घरों में दोनों वक्त चूल्हे नहीं जल रहे हैं। देश के कम-से-कम 40 फीसदी लोगों को दोनों टाइम का खाना नहीं मिल रहा है। आप ने 9 महीनों में क्या किया? अगर नहीं किया तो मैं आप को हटने के लिए भी नहीं कह रहा हूं, आप शौक से वहां बैठे रहिए लेकिन महोदया, मैं आप के माध्यम से वित्त मंत्री जी और भारत सरकार से अनुरोध करना चाहूंगा कि आप इस देश की चौपट अर्थ-व्यवस्था को सुधारिए। आज किसान को उस के उत्पादन का लाभकारी मूल्य नहीं मिल रहा है। किसान जो अपने खेत में उत्पादन करता है, उस पर जो उस की लागत लगती है, उस से उसे कम पैसा मिल रहा है और इस तरह देश का किसान हतोत्साहित हो रहा है। गेहूं पैदा करने की उसकी इच्छा नहीं रह गई है, गन्ना कम पैदा कर रहा है। देश की अर्थ-व्यवस्था पर इसका जरूर प्रभाव पड़ेगा। किसान को लाभकारी मूल्य दीजिए, गरीब की ओर ध्यान दीजिए, देश की अर्थ-व्यवस्था को सुधारिए।

महोदया, अंत में आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से कहना चाहूंगा, वैसे मैं तो इनके प्रशंसकों में हूं, मेरे नेता भी रहे हैं जब इधर थे, इनके विचारों को मैं जानता भी हूं, कि यह विदेशी कंपनियों के जाल से आप बचिए वरना देश की अर्थ-व्यवस्था चौपट हो जाएगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

FELIVITTIONS TO SHRI PRANAB MUKHERJEE, ON BEING SELECTED BEST PARLIAMENTARIAN OF THE YEAR 1997.

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, it is just for the information of the House. About ten minutes ago it has come in the papers also. I believe no announcement has been made yet in the House in this regard. Shri Pranab Mukherjee, who is a senior member of this House, has been selected as 'best parliamentarian for 1997'.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Actually I was going to mention about it and congratulate him. I just received the letter from the Lok Sabha Secretariat that Mr. Pranab Mukherjee is being selected as the best Parliamentarian of 1997. It is a special honour that for the first time a member from the Rajya Sabha has been selected.

SHRI KAPIL SIBAL (Bihar): Madam, I may venture to say that it should not be the last time.

SHRI MD. SALIM (West Bengal): Madam, it is a pride for all of us.

SHRIMATI KAMLA SINHA (Bihar): Madam, a person who has been selected as best Parliamentarian for the year 1998, Mr. S. Jaipal Reddy, was also in the Rajya Sabha.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Jaipal Reddy has been selected for the year 1998 and Mr. Pranab Mukherjee for 1997. Mr. Jaipal Reddy was also in the Rajya Sabha. Actually all of them, who got the Awards till now, whether it is Mr. Atal Bihari Vajpayee or Mr. Chandra Shekhar, they were all groomed in the Rajya Sabha. They were all in the Rajya Sabha.

SHRI MD. SALIM: Members normally excel in this House and subsequently migrate to the other House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We do not want Mr. Pranab Mukherjee to go to that house.

SHRI PRANAB MUKHERJEE (West Bengal): Thank you for the compliments.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We do not want him to cross the floor of the Central Hall and go under anti-defection. Congratulations, Mr. Pranab Mukherjee.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Thank you.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): बधाई हो आपको, प्रणव साहब। ...(व्यवधान)... मैडम, अब 6.00 बजे खतम कर दीजिए।

श्रीमती कमला सिन्हा: इसी खुशी में।

THE APPROPRIATION (NO. 4) BILL 1998—CONTD.

उपसभापति: रामदेव भंडारी जी, आप नाम विदड्रा कर रहे हैं इसी खुशी में?

श्री रामदेव भंडारी (बिहार): मैडम, आप को तो मालूम ही है कि मैं बहुत कम बोलता हूं। ...(व्यवधान) महोदया, जब मंत्री जी बजट सत्र में अपना भाषण कर रहे थे तो देश की जनता के सामने उन्होंने बड़े बड़े वायदे किए थे। उन्होंने गरीबों के लिए किसानों के लिए, मजदूरों के लिए और इस देश के जो दूसरे लोग हैं उन सबके लिए वायदे किए थे। अभी ईश दत्त जी किसानों की बात कर रहे थे और कह रहे थे कि किसानों की जो उपज होती है उनको उसका पूरा मूल्य नहीं मिलता, मुनाफा नहीं मिलता। मुनाफा कैसे होगा? भारत सरकार कहती है कि किसानों के लिए हम खाद की पूरी व्यवस्था कर रहे हैं, लेकिन जब किसान खाद लेने के लिए दुकान पर जाते हैं तो उनको खाद नहीं मिलती है। हमारे जो कारखाने हैं बिहार में बरौनी, सिंदरी, पैसे के अभाव में उनकी स्थिति ठीक नहीं है। आप उनको पैसा नहीं दे रहे हैं और इसलिए वह कारखाने जिस गति से चलने चाहिएं, जो उनकी कैपेसिटी है, जिस कैपेसिटी में उत्पादन होना चाहिए, उस कैपेसिटी में वहां उत्पादन नहीं हो रहा है। अगर किसानों को खाद नहीं मिलेगा, तो उपज कैसे बढ़ेगी? और, अब तो पैटेंट भी आपने ला दिया है, पास भी करा दिया है, किसानों को अपना बीज भी नहीं मिलेगा, विदेशी बीज के लिए किसान निर्भर रहेंगे और जब बीज नहीं मिलेगा तो फिर किसान उत्पादन कैसे कर पाएंगे और कैसे उनको उनके उत्पादन का मूल्य मिलेगा?

महोदया, मैं यह कहना चाहता हूं कि किसानों के लिए जो माननीय वित्त मंत्री जी ने बजट सत्र में वादा किया था, उस वादे को उन्होंने रत्ती भर भी पूरा नहीं किया। महंगाई के संबंध में मैं यहां चर्चा नहीं करना चाहता और इसलिए नहीं करना चाहता क्योंकि जनता ने तो महंगाई की मार झेली, इन्होंने भी महंगाई की मार बुरी तरह झेली है, दिल्ली इनके हाथ से चला गया, राजस्थान इनके हाथ से चला गया। इसलिए मैं महंगाई के संबंध में ज्यादा चर्चा करना उचित नहीं समझता हूं।

महोदया, मैं उत्तरी बिहार से आता हूं और वहां हर साल बाढ़ आती है। नेपाल से बड़ी-बड़ी नदियां निकलकर उत्तरी बिहार में आती हैं और हर साल अपने साथ बाढ़ लाती हैं, पानी लाती हैं, बालू लाती हैं और यह सरकार बिहार को बांटने की बात कर रही है। बिहार को बांटना चाहती है, उत्तरी बिहार और दक्षिणी बिहार में। बिहार को अगर बांट दिया जाएगा तो आप सब लोग जानते हैं कि उत्तरी बिहार में बाढ़, बालू होगा और इसके अलावा कुछ नहीं रहेगा—चाहे वह 'कोसी' की बाढ़ हो या 'कमला' की बाढ़ हो या दूसरी बड़ी नदियों की बाढ़ हो। बिहार की कोई जनता बिहार को बांटना नहीं चाहती है। भारत सरकार अपने राजनीतिक लाभ के